UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 171-174

"सशक्त भारत के निर्माण में महिला आर्थिक सशक्तिकरण"

डॉ. अंजना जैन
(प्राध्यापक अर्थशास्त्र, शा. महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महा.)

सारांश
वैश्वीकरण के इस युग में आज विश्व का कोई भी देश महिला सशक्तिकरण के प्रभाव से अछुता नहीं है। वैश्विकरण ने भारतीय महिलाओं की स्थिति को भी प्रभावित किया है। सदियों से भारतीय महिलाओं के साथ दोयमदर्जे की नागरिक की तरह व्यवहार किया जाता रहा है। किन्तु अब सरकार महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए निरन्तर प्रयत्नशील है। ताकि देश का सर्वांगीण सन्तुलित विकास सम्भव हो सके। प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक समंकों पर आधारित है जिसमें भारत में महिला साक्षरता, कार्य सहभागिता एवं स्त्री–पुरूष अनुपात का अध्ययन कर महिला सशक्तिकरण की स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है। वैश्वीकरण के इस युग में आज विश्व का कोई भी देश महिला सशक्तिकरण के प्रभाव से अछुता नहीं है। वैश्विकरण ने भारतीय महिलाओं की स्थिति को भी प्रभावित किया है। सदियों से भारतीय महिलाओं के साथ दोयमदर्जे की नागरिक की तरह व्यवहार किया जाता रहा है। किन्तु अब सरकार महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए निरन्तर प्रयत्नशील है। ताकि देश का सर्वांगीण सन्तुलित विकास सम्भव हो सके। प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक समंकों पर आधारित है जिसमें भारत में महिला साक्षरता, कार्य सहभागिता एवं स्त्री–पुरूष अनुपात का अध्ययन कर महिला सशक्तिकरण की स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है।

वैश्वीकरण के इस युग में आज विश्व का कोई भी देश महिला सशक्तिकरण के प्रभाव से अछुता नहीं है। वैश्विकरण ने भारतीय महिलाओं की स्थिति को भी प्रभावित किया है। सदियों से भारतीय महिलाओं के साथ दोयमदर्जे की नागरिक की तरह व्यवहार किया जाता रहा है। किन्तु अब सरकार महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए निरन्तर प्रयत्नशील है। ताकि देश का सर्वांगीण सन्तुलित विकास सम्भव हो सके। प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक समंकों पर आधारित है जिसमें भारत में महिला साक्षरता, कार्य सहभागिता एवं स्त्री–पुरूष अनुपात का अध्ययन कर महिला सशक्तिकरण की स्थिति को जानने का प्रयास किया गया है।

यदि आप किसी देश या युग की उपलब्धियों एवं श्रेष्ठता का मूल्यांकन करना चाहते हैं तो इसका सर्वातम मादण्ड है उस देश में उस युग में स्त्रियों की दशा कैसी है? क्योंकि स्त्रियाँ संस्कृति, सभ्यता व प्रगति का अभीष्ट मापदण्ड होती है। यदि महिलाएं सशक्त होगी तो देश सशक्त होगा। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है – महिलाओं को समाज में इस तरह अधिकार व सम्मान प्राप्त हो कि, समाज में उनके अस्तित्व की पहचान अबला के रूप में नहीं सबला के रूप में हो। स्त्री अपनी अन्तरनिहित ऊर्जा को पहचान सके, उसके विचार, कथन व कार्य करने की आजादी हो, अवसर सुविधा आन्तरिक और बाह्य वातावरण ऐसा उपलब्ध हो जिसमें वे अपने आत्मबल, आत्मविश्वास सामाजिक आर्थिक आत्मनिर्भरता का विकास कर सके।[1] साथ ही अन्याय प्रताड़ना और अपने ऊपर हो रही हिंसा के विरूद्ध आवाज उठा सके। सदियों से शोषित की जा रही नारी शोषण से मुक्त हो सके।

अध्ययन का उद्देश्य

(1) सशक्तिकरण की दृष्टि से महिला साक्षरता का अध्ययन करना।
(2) महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
3) आर्थिक सशक्तिकरण की दृष्टि से महिला कार्य सहभागिता का अध्ययन करना।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 171-174

तथ्यों का संकलन :

1. **प्राथमिक संकलन** – साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन पद्धति द्वारा।
2. **द्वितीयक संकलन** – समाचार पत्र पत्रिकाएं, पूर्व शोध अध्ययन एवं विभिन्न शासकीय कार्यालयों से प्राप्त सूचनाएं।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

महिला सशक्तिकरण की पहल 1985 में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन नोरोबी में की गई थी जिसमें कहा गया महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य महिलाओं को पुरूषों के बराबर वैधानिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक व शैक्षणिक क्षेत्र में उनके परिवार, समुदाय, समाज एवं राष्ट्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में निर्णय लेने की स्वायतता है।[2] के. पी. शर्मा (2004) ने बाजारवाद और खुली अर्थव्यवस्था में महिला सशक्तिकरण के अध्ययन में बताया कि स्त्रियों को वोट, पोस्ट और नोट में मान्यता मिल रही है।[3] कोहली (1994) ने दिल्ली की 20 महिला उद्यमियों का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया कि 90 प्रतिशत महिला उद्यमी अल्प शिक्षित है।[4] पुजुर (1989) ने महाराष्ट्र की 968 महिला उद्यमियों का स्वसहायता समूह के सम्पर्क में अध्ययन किया और अध्ययन में पाया कि सर्वाधिक महिलाएं घरेलू उद्यम चलाती है जिसके अन्तर्गत पापड़, बड़ी आचार, मीठाई, वस्त्र निर्माण आदि शामिल है। इन महिलाओं ने घरेलू उद्योग के माध्यम से अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारा है।[5] उषा (1990) ने मद्रास के महानगरीय क्षेत्र में महिलाओं की औसत आय प्रभावों के समान उत्पादकता होने की स्थिति में भी उनसे कम होती है। कारण संसाधनों की कमी को बताया है।[5]

अध्ययन का विश्लेषण

वैश्विकरण के इस युग में आज विश्व का कोई भी देश इसके प्रभाव से अछुता नहीं है। वैश्विकरण ने भी भारतीय महिलाओं की स्थिति को बहुत हद तक प्रभावित किया है। भारत में भी महिलाओं की शैक्षणिक, आर्थिक व सामाजिक राजनैतिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

तालिका क्र. 1
साक्षरता और महिला सशक्तिकरण

वर्ष	पुरूष (%)	महिलाएं (%)	अन्तर (% में)
1951	27.16	8.86	18.30
1961	40.40	15.35	25.05
1971	45.96	21.97	23.98
1981	56.38	29.76	26.62
1991	64.13	39.29	24.84
2001	75.26	53.67	21.59
2011	82.14	65.45	16.68

स्त्रोत : जनगणना वर्ष 1951–2011

..

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 171-174

तालिका क्र. 2
कार्य सहभागिता वृद्धि दर एवं महिला सशक्तिकरण

वर्ष	पुरूष	वृद्धि दर	स्त्री	वृद्धि दर
1981	49.33	-	19.08	-
1991	51.8	+2.27	22.7	+3.62
2001	51.55	+0.49	22.25	+0.18
2011	53.30	+1.75	25.5	+3.25

स्त्रोत : जनगणना वर्ष 1981–2011

तालिका क्र. 3
भारत में स्त्री पुरूष अनुपात

वर्ष	लिंगानुपात भारत	वर्ष	लिंगानुपात
1941	945	1981	934
1951	946	1991	927
1961	941	2001	933
1971	930	2011	940

स्त्रोत : जनगणना वर्ष 1941 से 2011 सांख्यिकीकि विभाग

तालिकाओं का विश्लेषण

तालिका क्रमांक–1 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि, 1951 में महिलाओं की साक्षरता दर 8.86 प्रतिशत थी जो 2011 में बढ़कर 65.46 प्रतिशत हो गई अर्थात महिलाओं की साक्षरता दर में वृद्धि हुई है। किन्तु वर्ष 1951 की तुलना में 2011 में महिला पुरूष साक्षरता अन्तर में कमी दृष्टिगत होती है।

तालिका क्रमांक–2 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 1981 में स्त्री सहभागिता 19.08 प्रतिशत थी जो 2011 में बढ़कर 25.5 प्रतिशत हो गई। इस प्रकार महिला सशक्तिकरण में वृद्धि परिलक्षित हुई है जो पुरूषों से अधिक है। इसका प्रमुख कारण महिलाओं की साक्षरता में वृद्धि होना तथा देश में उदारीकरण व विकास होना है।

तालिका क्रमांक–3 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि, 1941 से लेकर 2011 तक पुरूषों की तुलना में स्त्रियों का अनुपात हमेशा कम रहा है (प्रतिहजार पुरूषों की पीछे)। इसका प्रमुख कारण बेटियों के जन्म को बुरा माना गया। बेटों को कुलदीपक माना गया जो स्त्रियों की दयनीय दशा को बताता है।

तथ्याों का विश्लेषण

आज भी भारतीय महिलाएं पुरूषों की तुलना में काफी कमजोर, निर्बल और दोयम दर्जे की जिन्दगी जी रही है। अध्ययन में पाया गया कि, महिला सशक्तिकरण के मार्ग में कई चुनौतियाँ है। अशिक्षा, महिला सशक्तिकरण के मार्ग की सबसे बड़ी चुनौती है। सामन्तवादी दृष्टिकोण, लिंगभेद, गरीबी, पुरूष प्रधान समाज, जागरूकता का अभाव, संकीर्ण सामाजिक ढांचा आदि महिला सशक्तिकरण के मार्ग की चुनौतियाँ है।

निष्कर्ष

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. 171-174

महिला सशक्तिकरण की दिशा में देश की सरकार ने अनेक कार्यक्रमों व योजनाओं को लागू किया है जिसके कारण महिलाओं की दशा में पूर्व की तुलना में स्थिति में सुधार हुआ है। लेकिन आज भी महिलाओं की स्थिति दोयम दर्जे के नागरिक की तरह है। अतः सशक्त भारत के निर्माण हेतु महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ, पोषण व कौशल पर व्यय व विनियोग किया जाय। समाज को अपनी सामन्तवादी सोच को बदलना होगा। पारिवारिक लोकतंत्र कायम करना होगा। लिंगभेद को समाप्त करना होगा। राजनीति में महिला सहभागिता को बढ़ाना होगा। महिलाओं कां आर्थिक व कानूनी रूप से जागृत करना होगा। इस हेतु कार्यशालाओं का आयोजन करना होगा। महिला सशक्तिकरण तभी सफल हो सकता है जब महिला सशक्तिकरण के लिए स्वयं प्रयास करेगी। उन्हें स्वयं अपनी क्षमता को पहचानना होगा। साहस व आत्म विश्वास जागृत करना होगा।

सन्दर्भ सूची :

1. गडकर – आर – नारी चिन्तन नई चुनौतियाँ 2010, पृ.क्र. 4
2. गुप्ता –बी.के. – महिला सशक्तिकरण के मायने – प्रतियोगिता दर्पण, दिसम्बर 2005, पृ. 890
3. शर्मा के.पी. – बाजारवाद और खुली अर्थव्यवस्था में महिला सशक्तिकरण (2004) पृ.क्र. 67
4. सोनकर बी.एल.एवं सेठी ए. – भारत में महिला सशक्तिकरण और समावेशी विकास – माईन्ड एंड सोसायटी,, वॉल्युम नं. 4, 2015, पृ.क्र. 58
5. सोनकर बी.एल.एवं सेठी ए. – भारत में महिला सशक्तिकरण और समावेशी विकास – माईन्ड एंड सोसायटी,, वॉल्युम नं. 4, 2015, पृ.क्र. 57